अरावली सफारी पार्क

चर्चा में क्यों?

हाल ही में देश भर से कई सेवानिवृत्त **भारतीय वन सेवा अधिकारियों ने प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन सौंपकर** गुरुग्राम और नूह के कुछ हिस्सों में **प्रस्तावित 10,000 एकड़ के अरावली सफारी पार्क परियोजना का** विरोध किया।

- उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि **पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र** में किसी भी हस्तक्षेप में विनाश के बजाए **"संरक्षण और पुनर्स्थापन"** को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

मुख्य बिंदु

- **अरावली सफारी पार्क:**
  - यह परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी परियोजना होगी। वर्तमान में **अफ्रीका** के बाहर सबसे बड़ा क्यूरेटेड सफारी पार्क **शारजाह** में है, जो फरवरी 2022 में खोला गया था, जिसका क्षेत्रफल लगभग दो हज़ार एकड़ है।
  - इसका उद्देश्य **पर्यटन को बढ़ावा देना तथा** स्थानीय लोगों के लिये रोज़गार के अवसर सृजित करना है।
- **पारिस्थितिकीय चिंताएँ:**
  - इस परियोजना से पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र में **वाहनों का आवागमन** और निर्माण कार्य बढ़ने से पर्यावरण को हानि हो सकती है।
  - उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि **अरावली की पहाड़ियाँ** गुरुग्राम और नूंह के जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों के लिये **महत्त्वपूर्ण जल भंडार** के रूप में काम करती हैं।
  - **पार्क में प्रस्तावित "अंडरवाटर जोन" जल स्तर को प्रभावित सकता है, जिससे उस** क्षेत्र में और जल की कमी हो सकती है, जिसे पहले से ही **केंद्रीय भूजल बोर्ड** द्वारा **"अतिदोहित" के रूप में वर्गीकृत किया गया है।**
- **कानूनी और पर्यावरणीय प्रतिबंध:**
  - इस बात पर ज़ोर दिया गया कि सफारी पार्क **"वन"** श्रेणी के अंतर्गत आता है, जहाँ पर्यावरण कानून **वनों की कटाई, भूमि की सफाई और निर्माण पर सख्त प्रतिबंध लगाते हैं।**
  - **उन्होंने वन संरक्षण अधिनियम, 1980 के तहत सर्वोच्च न्यायालय** और **राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) के** कई आदेशों का हवाला दिया, जो ऐसी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाते हैं।
- **हरियाणा के वन क्षेत्र और स्थिरता पर प्रभाव:**
  - **हरियाणा में भारत में सबसे कम वन क्षेत्र है और** अरावली पर्वतमाला एक महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिकी बफर के रूप में कार्य करती है।
  - अधिकारियों ने चेतावनी दी कि क्षेत्र में खनन और मानव बस्तियाँ पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ देंगी, **सतत विकास लक्ष्यों (SDG) का** उल्लंघन करेंगी और दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्थिरता को नुकसान पहुँचाएंगी।
- **पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र:**
  - **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय** की **राष्ट्रीय वन्यजीव कार्य योजना (2002-2016)** में यह प्रावधान किया गया था कि राज्य सरकारों को **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986** के तहत **राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों की सीमाओं के 10 किलोमीटर के भीतर** आने वाले क्षेत्र को **पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (ESZ) घोषित करना चाहिये।**
  - जबकि **10 किलोमीटर का नियम एक सामान्य सिद्धांत के रूप में लागू किया जाता है,** इसके आवेदन की सीमा अलग-अलग हो सकती है। **10 किलोमीटर से परे के क्षेत्रों को भी केंद्र सरकार द्वारा ESZ के रूप में अधिसूचित किया जा सकता है,** अगर वे पारिस्थितिक रूप से महत्त्वपूर्ण **"संवेदनशील गलियारे" रखते हैं।**

अरावली पर्वतमाला

- उत्तर-पश्चिमी भारत की अरावली पर्वतमाला, जो **विश्व के सबसे पुराने वलित पर्वतों में से एक है, अब 300 से 900 मीटर की ऊँचाई वाले** अवशिष्ट पर्वतों का रूप ले चुकी है।
- इसका विस्तार **गुजरात के हिम्मतनगर से शुरू होकर हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली** (लगभग 720 किमी.) तक है।
- पर्वतों को **दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है- सांभर सिरोही श्रेणी और राजस्थान में सांभर खेतड़ी श्रेणी,** जहाँ इनका विस्तार लगभग 560 किलोमीटर है।
- दिल्ली से हरिद्वार तक फैली अरावली की छिपी हुई शाखा गंगा और सिंधु नदियों के जल निकासी के बीच विभाजन पैदा करती है

- यह एक **वलित पर्वत है,** **जिनमें चट्टानें मुख्य रूप से वलित भूपर्पटी से बनती हैं,** जब दो अभिसारी प्लेटें पर्वतजनित गति नामक प्रक्रिया द्वारा एक दूसरे की ओर गति करती हैं।
- अरावली की उत्पत्ति लाखों साल पहले हुई थी, जब भारतीय उपमहाद्वीप की मुख्य भूमि यूरेशियन प्लेट से टकराई थी। कार्बन डेटिंग से पता चला है कि **पर्वतमाला में खनन किये गए ताँबे और अन्य धातुएँ कम-से-कम 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व की हैं।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/aravali-safari-park-1